चरित्र निर्माण से ही कायम रहेगी स्वाधीनता

सांची विश्वविद्यालय में 'याद करो कुर्बानी' व्याख्यानमाला का समापन

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आज व्याख्यानमाला "याद करो कुर्बानी" का समापन हो गया। स्वतंत्रता के 70वें वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित व्याख्यान माला के समापन सत्र में हिंदू धर्माचार्य सभा के सचिव, स्वामी परमात्मानंद सरस्वती ने कहा कि समाज और व्यक्ति के **चरित्र निर्माण के माध्यम से ही स्वाधीनता** कायम रहेगी। उन्होंने कहा कि इसके लिए समाज को कर्तव्यों के प्रति जागरुक करना होगा और जनभागीदारी तथा ***सबका साथ-सबका विकास*** करके ही स्वाधीनता को यथावत रखा जा सकता है।

स्वामी परमात्मानंद सरस्वती ने उदाहरण के जरिए समझाया कि हम कहते हैं कि विश्व में 32 प्रतिशत डॉक्टर भारतीय है , नासा में 36 प्रतिशत वैज्ञानिक भारतीय हैं...लेकिन ऐसा ही गर्व हमें अपने देश के बारे में बात कर ने पर क्यों नही होता। उनका कहना था कि ये भारतीय जो विदेश में हैं उन पर हमें गर्व होता है....लेकिन असल में , भारत के अंदर ही हम भारतीय नहीं बदले हैं और यह स्वाधीनता की नहीं पराधीनता की निशानी है।

स्वामी परमात्मानंद स्वामी ने कहा कि अगर हमें स्वाधीनता को कायम रखना है तो शासन को व्यक्ति और समाज के चरित्र निर्माण को सुनिश्चित करना होगा। उनका कहना था कि आर्थिक विकास के साथ-साथ समाज का निर्माण ही हमारी स्वतंत्रता कायम रखेगा। शिक्षा व्यवस्था पर स्वामीजी ने कहा कि व्यावसायिक शिक्षा से लोग आय अर्जित करना तो सीख गए, लेकिन हमें ऐसी शिक्षा व्यवस्था कायम करनी होगी जिससे लोग जीवन जीने का तरीका सीख जाएं।

महात्मा गांधी का उल्लेख करते हुए स्वामी परमात्मानंद ने कहा कि यह गांधी जी का चारित्रिक बल ही था जिसने अंग्रेज़ों की पराधीनता से हमें स्वतंत्रता दिलवाई। उनका कहना था कि स्वाधीनता कब स्वच्छंदता में बदल जाती है पता ही नहीं चलता , इसलिए स्वाधीनता की रक्षा, धर्म के माध्यम से की जाए.....क्योंकि धर्म मर्यादा का ज्ञान कराता है और यही धर्म चरित्र का निर्माण करता है। उनका कहना था कि भारत ने स्वराज्य प्राप्त करना वैदिक काल से ही प्रारंभ कर दिया था और अथर्ववेद के सूत्र में भी

बताया गया है कि सबके कल्याण को पाकर ही स्वाधीनता को हासिल किया जा सकता है।

समापन समारोह में प्रो. वैंकटप्रसन्न चतुर्वेदी स्वामी ने कहा कि स्वाधीनता हृदय से प्रारंभ होती है लेकिन इसके लिए हमें समाज और स्वयं अपने अंदर भी अनुकूल वातावरण निर्मित करना होगा। संस्कृत के विद्वान पंडित वसंत गाडगिल ने कहा कि सांस्कृतिक विरासत को पाकर ही स्वराज को पाया जा सकता है। उनका कहना था कि यह स्वराज भी तब हासिल होगा जब हम अपनी प्राचीन मर्यादाओं को अपनाएंगे।

"याद करो कुर्बानी " व्याख्यानमाला के समापन समारोह के दौरान सांची विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री और कुलसचिव श्री राजेश गुप्ता एवं अधिष्ठाता प्रो. बैद्यनाथ लाभ भी उपस्थित थे। सांची विश्वविद्यालय में याद करो कुर्बानी व्याख्यानमाला का आयोजन दिनांक 16 से 23 अगस्त , 2016 तक किया गया। इस दौरान विभिन्न विषय विद्वानों ने स्वाधीनता के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से व्याख्यान दिए।